शेख़ फ़रीद - सबद २८
फरीदा गलीए चिकड़ दूर घर नाल पिआरे नेह ॥
सलोक, सेख फरीद, गुरु ग्रंथ साहिब, १३७९

फरीदा गलीए चिकड़ दूर घर नाल पिआरे नेह ॥
चला त भिजै क्मबली रहां त तुटै नेह ॥२४॥

सार: एक अर्थपूर्ण संबंध, चाहे वह स्वयं के साथ हो, किसी अन्य व्यक्ति के साथ हो या प्रकृति के साथ हो, ईमानदारी, पूर्ण उपस्थिति, निश्चिंतता और खुलेपन की मांग करता है। इस तरह की ईमानदारी अक्सर हमारी सहजता को तोड़ती है, नियंत्रण को चुनौती देती है और अहंकार को अस्थिर करती है। इस ईमानदारी को अपनाने से हमें सुरक्षा का भ्रम तो खोना पड़ सकता है लेकिन यह कहीं अधिक मूल्यवान चीज़ प्रदान करता है: एक प्रामाणिक आत्मा और अपने अस्तित्व से एक गहरा जुड़ाव।इस तरह की संवेदनशीलता और खुलेपन से हम ख़ुद को खोते नहीं बल्कि हम स्वयं से और अधिक पूर्ण रूप से मिलते हैं।

फरीदा गलीए चिकड़ दूर घर नाल पिआरे नेह ॥
फ़रीद कहते हैं कि रास्ता कीचड़ भरा है और घर दूर है लेकिन मेरा प्यार प्रियतम के साथ है। यह जीवन की व्याकुलताओं और सत्य से दूर होने फिर भी आंतरिक चेतना के प्रति प्रेम मजबूत बना रहने का प्रतीक है।

चला त भिजै क्मबली रहां त तुटै नेह ॥२४॥
अगर मैं बाहर जाता हूँ तो मेरा कंबल भीग जाता है अगर मैं रुकता हूँ तो प्रेम टूट जाता है, यह दर्शाता है कि अगर कोई सत्य को चुनता है तो उसे चुनौतियों का सामना करना पड़ता है अगर नहीं तो वह अपने भीतर की आंतरिक आत्मा से नाता खो देता है। (२४)

तत्त्व: शेख़ फ़रीद ने सच्चे जीवन की ओर बढ़ने के आंतरिक संघर्ष को अत्यंत संवेदनशीलता और खूबसूरती से चित्रित किया है। कीचड़ भरा रास्ता सांसारिक उलझनों और विकर्षणों का प्रतीक है और कंबल अहंकार का जो चुनौतियाँ पैदा करता है। वह उन क्षणों की बात करते हैं जब सत्य के मार्ग पर चलते रहना अव्यवस्थित, दूर और असहज लगता है फिर भी पीछे हटना अपने विवेक के साथ विश्वासघात जैसा लगता है। यह दोहा एक दुविधा प्रस्तुत करता है, या तो अल्पकालिक असुविधा का सामना करें या जड़ता से स्थिर होने के कारण अपने स्वयं से कट जाएं।

पहलकदमी

Oneness In Diversity Research Foundation

वेबसाइट: OnenessInDiversity.com

ईमेल: **onenessindiversityfoundation@gmail.com**